करेला की व्यवसायिक खेती

डा0 टी0आर0 नंदल एवं सविता शर्मा
चौ0 स0कु0 कृषि विश्वविद्यालय, पर्वतीय अनुसन्धान एवम् प्रसार केन्द्र, धौलाकुंआ, सिरमौर, (हि0प्र0) भारत

करेला भारत के लगभग सभी प्रदेशों में एक लोकप्रिय सब्जी है। इसके फलों का उपयोग रसेदार, भरवाँ या तले हुए शाक के रूप में होता है। कुछ लोग इसे सुखाकर भी संरक्षित करते हैं। यह खीरा वर्गीय फसलों की एक मुख्य फसल है। करेला केवल सब्जी ही नहीं बल्कि गुणकारी औषधि भी है। इसके कडवे

पदार्थ द्वारा पेट में उत्पन्न हुए सूत्रकृमि और अन्य प्रकार के कृमियों को खत्म किया जा सकता है। करेले का उपयोग अनेक दवाइयों में भी होता है। गठिया रोग के लिए यह एक अत्यंत गुणकारी औषधि है। इसको टॉनिक के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। अनेक रोग जैसे मध ुमेह आदि के उपचार के लिये यह एक रामबाण है। इसके फलों का रस और पत्तियों का रस आदि से उदर (पेट) के अनेक प्रकार के रोगों को दूर किया जाता है।

करेले में अनेक प्रकार के खनिज तत्वों का समावेश होता है। इसके फलों के 100 ग्राम भोज्य अंश में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन ए और सी आदि पाए जाते हैं।

भूमि एवं जलवायु : करेले की फसल को पूरे भारत में अनेक प्रकार की मृदाओं में उगाया जाता है। लेकिन इसकी अच्छी वृद्धि एवं काश्त के लिए अच्छे जल निकास युक्त जीवांश वाली दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है। गर्म एवम् आर्द्र जलवायु में करेले की उपज सर्वोत्तम होती है। करेला यद्यपि अपने वर्ग के अन्य शाकों की अपेक्षा अधिक शीत सहन कर लेता है। परन्तु यह पाला नहीं सहन कर पाता है।

भूमि की तैयारी : करेले को खेत में बोने से पहले खेत को तैयार करना बहुत जरूरी है। खेत में 2–3 गहरी जुताइयां करने के बाद पाटा लगायें–ताकि मिट्टी के ढेले टूट जाए और मिट्टी भूरभूरी तथा पोली हो जाए। इसके बाद सुविधा अनुसार क्यारियां और बरहे बना लेने चाहिए। करेले की खेती के लिए लम्बाई में 2 मीटर एवं चौडाई 2 मीटर की क्यारियों में बांटना चाहिए। लेकिन क्यारियों के बीच में 50 सेमी0 की एक नाली होनी चाहिए। क्यारियों के दोनों किनारों पर 45 सेमी0 की दूरी पर बीज के लिए थाला बनाए जाना चाहिए।

उन्नत किस्में :

सोलन हरा : इस किस्म के फलों का रंग हरा, लम्बाई 20 से 25 सेमी0 व मोटाई 4–5 सेमी0 होती है। औसत उपज 150–175 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

सोलन सफेद : फल सफेद रंग के 20 से 25 सेमी0 लम्बे व 4–5 सेमी0 मोटे होते हैं। औसत उपज 150–175 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

अन्य किस्में : पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, अर्का हरित, प्रिया को–1, एस0डी0यू0–1, कोइम्बटूर लांग, कल्यानपुर सोना, बारहमासी करेला आदि।

बीज की मात्रा : करेला बुआई के लिए बीज की मात्रा एक हेक्टेयर में लगभग 5–8 किग्रा0 होनी चाहिए अंकुरण क्षमता 80–85 प्रतिशत होना उत्तम है।

खाद एवं उर्वरक : खेत में गोबर की खाद 100 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा यूरिया 200 किग्रा0 सुपर फास्फेट 300 किग्रा0 व म्यूरेट ऑफ पोटाश 90 किग्रा0 प्रति हैक्टेयर की दर से डालनी चाहिए।

बीजाई का समय :

निचले क्षेत्र	फरवरी–मार्च (सिंचित क्षेत्र)
	मई – जून (असिंचित क्षेत्र)
मध्य क्षेत्र	अप्रैल–मई
ऊँचे क्षेत्र	अप्रैल

90 से 150 सेमी0 की दूरी पर तीन या चार बीज लगाने चाहिए और बाद में अंकुरण के बाद एक या दो अच्छे और स्वस्थ पौधे ही रखें। बीज को बोने से पहले 24 घण्टे पानी में भिगों लेना चाहिए।

खेत को तैयार करते समय गोबर की खाद व सुपर फास्फेट की पूरी मात्रा तथा यूरिया व म्यूरेट ऑफ पोटाश की आधी मात्रा मिट्टी में बीजाई के समय डालनी चाहिए। शेष यूरिया को दो भागों में एक महीने के बाद व फूल आने के समय डालें। पोटाश की शेष आधी मात्रा अच्छी फसल बढने पर देनी चाहिए। लताओं के नीचे लकडियाँ (झांबे आदि) इस प्रकार रखनी चाहिए कि लताएं सीधे जमीन पर न फैलें जिससे वर्षा के पानी से पौधे और फल खराब न होने पाएं। जल निकासी के लिए खेत में उचित व्यवस्था करनी चाहिए। इसके साथ–साथ खरपतवार की रोकथाम के लिए भी निराई–गुडाई समय पर करते रहें। सिंचाई तभी करें जब आवश्यकता हो। गर्मी के मौसम में 4–5 दिन के अन्तर पर सिंचाई करना आवश्यक है।

बीज बुआई : खेत में पहले 45 सेमी0 चौडी नालियां 90–150 सेमी0 की दूरी पर बना लें। उसके बाद नालियों के दोनों तरफ बनी मेढों की ढाल पर बीज की बोआई करें। बीजों की बोआई इस तरह करने से पौधों की सिंचाई सुचारू व सही ढंग से होती है। बीज 2–3 सेमी0 की गहराई में तथा प्रत्येक नाली या क्यारी में 3–4 बीज बोते हैं। इसके अलावा करेले की बुआई पॉलीथीन की थैलियों में भी कर सकते हैं। इन पॉलीथीन की थैलियों में गोबर की सडी खाद एवं मिट्टी को बराबर मिलाकर भर देते हैं। हर थैली में 3–4 बीज होते हैं। थैलियों को दिन के समय धूप में और रात के समय छायादार स्थान आदि के नीचे रख दिया जाता है। इसके बाद जो पौधे तैयार हो जाएं, उनको तैयार किए गए खेत में 45 सेमी0 की दूरी पर बनी हुई नालियों या क्यारियों में लगा दिया जाता है। गड्ढ़ों का आकार 20 x 20 x 20 सेमी0 बना उसमें आधी मिट्टी और आधी गोबर कमी खाद मिलायें। उसके बाद ही रोपण करना चाहिए। पौधों को लगाने से पहले तैयार किए गए थैली के पौधों में सावधानी से चीरा लगाकर पॉलीथीन की थैली को अलग कर लेते हैं ताकि इसके द्वारा जड़ो का विकास आसानी से हो सके। पौधे लगाने के बाद हल्की सिंचाई करें।

फल की तुडाई एवम् उपज : करेले के फलों की तुडाई बीजाई के लगभग 60–65 दिनों के बाद आरम्भ हो जाती है। फल तुडाई के लिए फलों के रंग, आकार व साईज आदि को भी ध्यान में रखा जाता है। जब केरेले के फल देखने में हरे, नर्म एवम् आकर्षक लगें तो उस अवस्था में तुडाई करें। तुडाई 4–5 दिन के अन्तराल पर होनी चाहिए। फलों के साथ में डंठल की लम्बाई 2 सेमी0 से कम नहीं होनी चाहिए। इससे फल अधिक समय तक टिके हुए रहते हैं। इसकी औसत उपज 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती हैं।

कीडे एवम् बिमारियां :

फल मक्खी : ये कीड़े, गूद्दे में अण्डे देते हैं और फल को तेजी से खाते हैं जो बाद में खाने योग्य नहीं रहते।

उपचार : जब मक्खी फसल पर नजर आए तभी उन्हें आकर्षित करने के लिए 50 ग्राम गुड या चीनी और 10मिली0 मैलाथियान 50 ई.सी. को 5 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें। फैनथियान 50 ई.सी. 5 लीटर पानी में घोलकर छिडकें।

माईट्स : ये छोटे कीडे कोमल पत्तों से रस चूसते हैं और वहां पर सफेद स्थान बन जाते हैं। इस तरह पौधों की बढवार रूक जाती है या कम हो जाती है।

उपचार : कीट का प्रकोप होने पर मैलाथियान (750 मिली0 साइथियान/मैलाथियान 50 ई.सी.) का 750 लीटर पानी में छिडकाव करें। 10 दिन बाद फिर छिडकाव करें।

बीमारियां :

पाऊडरी मिल्डयू : फफूंद के कारण पत्तों, तने और अन्य रसीले भागों पर सफेद आटे जैसे धब्बे पडते हैं। फल सिकुडे हुए, घटिया किस्म के हो जाते हैं।

उपचार :

– कैराथेन (10 मिली0/10 ली पानी) का 2 से 3 बार 10 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें।

– हेक्सा कोनाजोल 5 ई.सी. 0.05 प्रतिशत या टेबूकानोंजोल (0.04 प्रतिशत) का 15 दिन के अन्तराल पर छिकाव करें।

डाऊनी मिल्डयू : फलों पर फीके कोणीय पीले भूरे धब्बे बनते हैं जो बाद में काले हो जाते हैं और फिर पौधा मुरझा जाता है।

उपचार : जुलाई के अन्त में डाइथेन एम–45 (0.25 प्रतिशत) तथा उसके बाद एक छिडकाव रिडोमिल एम जैड (0.25 प्रतिशत) और फिर 15 दिन के अन्तर पर दो छिडकाव डाइथेन एम–45 के करें।

– **एन्थ्रेकनोज** : पत्तों और फलों पर धब्बे से बन जाते हैं। *उपचार :* मैनकोजैब या डाइथेन एम–45 अथवा हैक्साकैप (25 ग्राम / 10 लीटर पानी का छिडकाव 15 दिन के अन्तराल पर करें।